ग़ज़ल - राम नारायण हलधर

तू खेती आंसुओं की कर,उन्हें क्या फर्क पड़ता है,
जिए तो जी,मरे तो मर,उन्हें क्या फर्क पड़ता है।

उन्हें पटरी बिछानी है,उन्हें सड़कें बनानी हैं,
तेरी खेती छिने या घर,उन्हें क्या फर्क पड़ता है।

भले ही खून से लिख दे,तू अपने दर्द की गाथा,
समंदर आंसुओं से भर,उन्हें क्या फर्क पड़ता है।

लटक जा पेड़ पे चाहे,कुएं में डूब के मर जा,
सुसाइड मंडियों में कर,उन्हें क्या फर्क पड़ता है।

तुझे सूखा निगल जाए,या फिर सैलाब खा जाए,
गिरे बिजली भले तुम पर, उन्हें क्या फर्क पड़ता है।

उन्हें हर काम में रिश्वत,मुनाफा चाहिए 'हलधर',
खुदा से तू डरे, तो डर ,उन्हें क्या फर्क पड़ता है।

मेरे कैमरे में बाबरी मस्जिद विध्वंस का 'सबूत' था, लेकिन वो इतिहास की भेंट चढ़ गया

प्रवीण जैन

बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में विशेष सीबीआई कोर्ट के फैसले ने, मेरे जीवन के एक 28 साल पुराने अध्याय को ख़त्म कर दिया है। काश ये फैसला अलग तरह से लिखा जाता, और इसका अंत मुझे इतनी उलझन में न छोड़ता।

उस समय मैं 'दि पायोनीयर' का फोटो जर्नलिस्ट था। मैं जानता हूं कि 5 दिसंबर 1992 को मैंने अयोध्या में क्या देखा। मेरा कैमरा उस रिहर्सल का गवाह था, जिसे कार सेवकों ने अंजाम दिया था, और इन सारे सालों में मैंने अपने निगेटिव्ज़, अपने बच्चों की तरह संभालकर रखे थे। मैं डरता था कि ज़रा सी नमी, पॉलिथीन में लिपटे इन निगेटिव्ज़ को ख़राब कर देगी। मेरा कैनन हर चीज़ का गवाह था। मेरी तस्वीरें बिना किसी संदेह के साबित करती थीं, कि 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद का विध्वंस, पहले से सोचा हुआ और एहतियात से नियोजित किया हुआ काम था।

अपने 'निगेटिव्स' को लेकर में पॉज़िटिव था

मुझे आज भी याद है सर्दियों का वो दिन, जब मेरी पत्नी ने मुझे एक ज़ोरदार तमाचा जड़ा था। डाकू हमारा घर लूट रहे थे। मेरी पत्नी उन गहनों के लिए आंसू बहा रही थी, जो डाकू ले गए थे, लेकिन मैं जल्दी से अंदर भागा, ये देखने के लिए कि क्या मेरे निगेटिव्ज़ सुरक्षित थे। इतने क़ीमती थे वो मेरे लिए।

बरसों तक अदालत में अनेकों पेशियों के बाद, अब मेरे मन में कनफ्यूज़न है, सवाल हैं, और कश्मकश है कि स्पेशल सीबीआई जज सुरेंद्र कुमार यादव की कोर्ट में मेरी गवाहियों, और उनके साथ हुई बातचीत का क्या मतलब निकाला जाए।

फैसले से पहले का दिन

मंगलवार 29 सितंबर 2020 को, फैसला सुनाए जाने से एक दिन पहले, मैं सुबह सवेरे 3.30 बजे उठा गया, क्योंकि मुझे सवेरे दिप्रिंट की सीनियर असिस्टेंट एडिटर, अनन्या भारद्वाज के साथ लखनऊ की फ्लाइट लेनी थी।

हम लखनऊ में उतरे और सीधे सुरेंद्र यादव के चैम्बर्स के लिए निकल पड़े, लेकिन हमें बताया गया कि उनका इंटरव्यू कर पाने का मौक़ा, तक़रीबन ना के बराबर है। उनकी सिक्योरिटी ने शुरू में तो मेरा विजिटिंग कार्ड भी, उनके पास भेजने से मना कर दिया, ये कहते हुए कि वो व्यस्त थे। हमसे कहा गया कि फोन पर बात करना, या परेशान करने वाले पत्रकारों का ध्यान करना तो दूर, उनके पास अपनी पत्नी से बात करने का भी समय नहीं है. लेकिन मैं ज़िद करता रहा, और उनकी सिक्योरिटी से अनुरोध किया, कि कम से कम मेरा विजिटिंग कार्ड जज तक पहुंचा दें। कुछ मिनटों के अंदर हमें अंदर बुला लिया गया।

हमें देखकर यादव ख़ुश हुए, और मेहरबानी दिखाते हुए हमें अलग से समय दिया। उन्होंने हमें बताया कि कैसे पूरी रात, उन्होंने भारी-भरकम सबूतों को पढ़ने, और अपना फैसला लिखने में बिताई है। मुझे हैरान करते हुए उन्होंने मुझे एक बिज़नेस कार्ड निकालकर दिखाया, जो मैंने उन्हें क़रीब दो साल पहले दिया था, जब मैं इंडियन एक्सप्रेस के साथ काम कर रहा था। उन्होंने मुझे दिखाने के लिए उसे बटुए से निकाला। मुझे ये जानकर विनम्रता का अहसास हुआ, कि उन्होंने मुझे याद रखा था।

फैसले का दिन

अगली सुबह, 30 सितंबर को- जिस दिन फैसला सुनाया जाना था- यादव ने हमें अलग से कुछ और समय दिया, और कोर्ट निकलने से पहले हमें अपने घर बुलाया। घर पर हम उनके परिवार से भी मिले, जिन्होंने हमें बताया कि जज इस केस पर कितनी मेहनत कर रहे थे। जब यादव को पता चला कि वो मेरी बर्थडे थी, तो उन्होंने हमें लड्डू पेश किए। उनके परिवार ने भी मुझे शुभकामनाएं दीं।

मुझे उनकी कुछ तस्वीरें क्लिक करने का भी मौक़ा मिला, उन क्षणों में जब हम कोर्ट जाने के लिए उनकी कार के पीछे चल रहे थे। मेरे दिमाग़ में कोर्ट पेशियों में बिताया गया अपना पूरा समय घूम रहा था। उस समय यादव ही सुनवाई कर रहे थे, जब बचाव पक्ष के वकीलों ने, मुझे बदनाम और अपमानित करने में सारी हदें पार कर दीं थीं। उन्होंने मुझे फ़र्ज़ी फोटोग्राफर क़रार दे दिया था, जो जल्दी से पैसा बनाने की फिराक़ में था। यादव उन सब लमहों के गवाह रहे थे, और उनके बटुए में रखा मेरा पुराना विज़िटिंग कार्ड मेरी प्रोफेशनल हैसियत का गवाह था। मुझे लगा कि उनका वो इशारा ही मेरे लिए एक प्रमाण था। इसने मुझमें उम्मीदें जगा दीं। मुझे लगा कि शायद आज भारत पर लगा वो दाग़ धुल जाएगा, जब एक ख़तरनाक राजनीतिक अभियान ने, हमारे देश के मिश्रित ताने-बाने को तार तार कर दिया था. कुछ ही मिनटों में, उन्होंने फैसला सुना दिया, और अन्य चीज़ों के अलावा मेरी तस्वीरों को भी ख़ारिज कर दिया कि ये ठोस सबूत नहीं हैं। ये फैसला देते हुए कि विध्वंस पहले से नियोजित नहीं था, उन्होंने केस के सभी 32 अभियुक्तों को बरी कर दिया। जज की निगाह में मेरा काम अच्छा नहीं था। फैसले ने मेरे निगेटिव्ज़ को, जिन्हें मैं कीमती समझता था, इतिहास की भेंट चढ़ा दिया।

त्रिशूल का पिशाच : जिम कॉर्बेट

हिमालय के ऊपरी इलाकों में कभी भी न रहे लोगों के लिए यह कल्पना भी कर पाना मुश्किल है कि वहां दूर-दूर बसी छोटी बसासतों में रहने वाले लोग किस तरह अंधविश्वास के घुटन भरे माहौल में रहते हैं। ऊंचे पहाड़ों में रहने वाले अनपढ़ ग्रामीणों के अंधविश्वासों और कम ऊंचाई वाले निचले मैदानी इलाकों में रहने वाले सभ्य, शिक्षित लोगों की मान्यताओं को अलग करने वाली रेखा भी इतनी बारीक है कि यह निश्चित करना मुश्किल होता है कि एक कहां पर ख़त्म होती है और दूसरी कहाँ से शुरू। इसलिए अगर आप मेरी इस कहानी के पात्रों के भोलेपन पर हँसना चाहेंगे, जिनके बारे में मैं अब बताने जा रहा हूं, तो मैं कहूंगा कि एक पल को रुकें। फिर मैं आपसे अपनी कहानी में कहे गए अंधविश्वास और जिन आस्थाओं और विश्वास के बीच आपका लालन-पालन हुआ है उसके बीच फर्क करने को कहुंगा।

कैसर (प्रथम विश्व युद्ध) की लड़ाई के बाद रॉबर्ट ब्लेयर और मैं कुमाऊं के भीतरी इलाके में शिकार खेलने के लिए निकले। सितम्बर की किसी शाम हमने त्रिशूल की तलहटी पर अपना पड़ाव डाला। हमें जानकारी दी गयी कि 'त्रिशूल के पिशाच' को हर साल 800 बकरों की बलि चढ़ाई जाती है। हमारे साथ 15 जोशीले और हंसमुख पहाड़ी आदमी थे, जिनके साथ मैं हमेशा ही शिकार पर जाया करता था। इन्हीं में से एक था बाला सिंह। वह गढ़वाली था और कई सालों से मेरे साथ कई अभियानों का हिस्सा रहा था। शिकार के लिए निकलते समय सबसे भारी सामान को लादकर भी अन्य आदमियों से आगे चलने में उसे गौरव की अनुभूति होती थी। चलते हुए उसके द्वारा गाये गए गीत के टुकड़े रास्ते को जिंदा बना देते थे। रात को सोने से पहले सभी अलाव के चरों ओर बैठकर गीत गाते। उस रात त्रिशूल के तल पर गाने का यह कार्यक्रम सामान्य के मुकाबले बहुत देर तक चलता रहा। साथ में तालियां पीटते हुए शोर मचाया जा रहा था और कनस्तर भी बजाए जा रहे थे।

हमारी चाहत थी कि इस जगह पर पड़ाव डालकर चरों तरफ भरल और थार ढूंढेंगे। लेकिन अगली सुबह नाश्ता करते हुए मैंने अपने आदमियों को तम्बू उखाड़ते हुए पाया। पूछने पर जवाब पाया कि यह जगह रहने लायक नहीं है, क्योंकि यहां बहुत नमी है, पीने के लिए पानी भी खराब है और ईंधन मिलना भी कठिन है। अच्छी बात यह कि इस जगह से सिर्फ 2 मील की दूरी पर एक बढ़िया जगह है।

मेरे साथ सामान ढोने के लिए कुल 6 लोग थे। मैंने देखा कि सामान की 5 पोटलियां बांधी जा रही थीं और बाला सिंह कंधे और सर तक कम्बल ढंके अलाव के पास ही अलग बैठा था। नाश्ता करने के बाद मैं बाला सिंह के पास गया। मैंने पाया कि सभी आदमियों ने काम करना बंद कर दिया है और वे मुझे गौर से देख रहे हैं। बाला सिंह ने मुझे आते देखकर भी मेरा अभिवादन करने की कोशिश नहीं की जो कतई स्वाभाविक नहीं था। मेरे सभी सवालों का उसने सिर्फ यही जवाब दिया कि वह बीमार नहीं है। उस दिन 2 मील की यह यात्रा हमने ख़ामोशी से पूरी की। इस दौरान बाला सिंह सबसे पीछे इस तरह चलता रहा जैसे वह नींद में या फिर नशे में हो।

अब यह भी साफ़ हो गया था कि बाला सिंह के साथ जो कुछ भी घटित हुआ है वह सभी 14 आदमियों को प्रभावित कर रहा है। क्योंकि सभी लोग अपने काम को स्वाभाविक उत्साह के साथ नहीं कर रहे थे और सभी के चेहरे पर भय और तनाव का भाव पसरा था।

जब वह 18 किलो का तम्बू ताना जा रहा था, जिसमें मैं और और रॉबर्ट ब्लेयर रहते थे, मैं अपने गढ़वाली कारिंदे मोथीसिंह को अलग ले गया और उससे पूछा कि बाला सिंह के साथ क्या घटा है? मोथीसिंह मेरे साथ पिछले 25 बरस से था. कई बहकाने वाले टालू जवाबों के बाद मैंने मोथीसिंह से अंततः वह संक्षिप्त और सीधी बात जान ही ली — पिछले रात जब हम अलाव के चारों ओर बैठे गा रहे थे तभी त्रिशूल का पिशाच बाला सिंह के मुंह में घुस गया और उसने उसे निगल लिया। मोथीसिंह ने आगे बताया कि उन सभी ने बाला सिंह के भीतर से पिशाच को बाहर खदेड़ने के लिए खूब शोर मचाया और टिन के डब्बे पीटे। लेकिन वे नाकामयाब रहे और अब इसका कुछ नहीं किया जा सकता। बाला सिंह अभी भी सर को कम्बल से ढंके सबसे अलग बैठा हुआ था। उतनी दूरी से वह दूसरे लोगों को नहीं सुन सकता था. अतः मैं उसके पास गया और पिछली रात के बारे में उससे पूछा। व्यथित आँखों से देर तक मुझे देखते रहने के बाद बाला सिंह बोला। उसने कहा कि 'अब इस बात का कोई फायदा नहीं है कि मैं आपको बताऊँ कि कल रात क्या घटा था? क्योंकि आप मुझ पर भरोसा नहीं करेंगे।'

'क्या मैंने कभी तुम पर अविश्वास किया?' 'लेकिन ये एक ऐसा मामला है, जिसे आप नहीं समझ सकेंगे.'

मैंने कहा मैं समझूं या नहीं मैं चाहता हूं कि तुम मुझे बात के बारे में ठीक-ठीक बताओ। लम्बी ख़ामोशी के बाद बाला बोला ठीक है साहब मैं आपको बताता हूं कि क्या हुआ था।

आप जानते हैं कि हमारे पहाड़ी गीतों की शैली है कि एक आदमी गाने की एक लाइन गाता है और मौजूद लोग उसे दोहराते हैं। जब पिछली रात मैं एक गाने की लाइन गा रहा था तो त्रिशूल का पिशाच मेरे मुंह में कूद पड़ा। मैंने उसे बाहर निकालकार फेंकने की बहुत कोशिश की लेकिन वह मेरे गले से फिसलकर पेट में पहुंच गया। अन्य लोगों ने पिशाच के साथ मेरे संघर्ष को देख शोर मचाकर और कनस्तर बजाकर उसे भागने की बहुत कोशिश की लेकिन पिशाच नहीं भागा, उसने सुबकते हुए कहा। मेरे यह पूछने पर कि अब वह पिशाच कहां है उसने नाभि पर हाथ रखते हुए उसने बताया कि वह यहां है और मैं उसे हिलते-डुलते महसूस कर सकता हूं। रॉबर्ट ने वह दिन हमारे शिविर के पश्चिमी इलाके का निरीक्षण करते हुए बताया और एक थार का शिकार भी किया। रात का भोजन निपटाकर हम देर रात तक बैठकर इस घटनाक्रम पर विचार करते रहे। हमने इस शिकार की योजना महीनों पहले बनाकर बहुत व्यग्रता के साथ इसकी प्रतीक्षा की थी। शिकारगाह में पहुँचने के लिए रॉबर्ट को 7 और मुझे 10 दिन की दुरूह पैदल यात्रा करनी पड़ी थी। अब जब हम यहां पहुंचे ही थे कि बाला सिंह ने त्रिशूल के पिशाच को निगल लिया था।

इस विषय पर हमारे व्यक्तिगत विचारों से कोई फर्क नहीं पड़ता था, फर्क पड़ता था तो इस बात से कि पड़ाव के हर आदमी को बाला सिंह के पेट में पिशाच के होने का विश्वास था और वे इससे भयभीत भी थे। इस स्थिति में एक महीने तक शिकार जारी रख पाना असंभव था। मेरे सामने सिर्फ यही रास्ता था कि बाला सिंह को लेकर नैनीताल लौट जाऊं और रॉबर्ट अकेले शिकार करना चालू रखे, बहुत अनिच्छा के साथ रॉबर्ट भी मेरे इस विचार से सहमत हो चला। अगली सुबह मैंने अपना सामान समेटा और नाश्ता निपटाकर नैनीताल वापसी की अपनी 10 दिवसीय यात्रा पर चल पड़ा।